REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 3.8014(UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 6 | MARCH - 2017

सुभद्रा कुमारी चौहान का काव्यः राष्ट्र निर्माण की भूमिका के रूप में

डॉ. विदुषी आमेटा[1], अरविंद कुमार व्यास[2]
[1]सहायक आचार्य, हिन्दी–विभाग,
माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा (राजस्थान)
[2]शोधार्थी, हिन्दी–विभाग, माधव विश्वविद्यालय,
पिण्डवाड़ा (राजस्थान)

प्रस्तावना :

भारतीय उपमहाद्वीप अपने आप में कई प्रकार की सामाजिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक विभिन्नताएं लिए हुए है। इसका इतिहास सदा से ही परिवर्तनकारी रहा है। भारत ने समय–समय पर यहाँ कई देशी–विदेशी शासकों के सुशासन और कुशासन को देखा है। यहाँ जितने भी देशी और विदेशी शासकों ने शासन किया, उस दौरान कुछ न कुछ नया जरूर घटित हुआ और जो भी नया हुआ उसे इतिहासकारों ने और साहित्यकारों ने अपनी कलम के माध्यम से अमर कर दिया। राष्ट्र निर्माण में जिन साहित्यकारों ने अपना सर्वस्व त्याग कर दिया उनमें प्रमुख नाम हिंदी की अमर साहित्यकार सुभद्रा कुमारी चौहान का आता है। इन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन और लेखन राष्ट्र को समर्पित किया है।

सुभद्रा कुमारी चौहान अपने युग की राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्रीय काव्यधारा की महत्वपूर्ण गायिका है। उनका महत्त्व एक क्रांतिकारी व्यक्तित्व और क्रांतिकारी लेखिका दोनों ही रूपों में है। लेखिका ने जैसा जीवन जिया वैसा ही रूप अपनी रचनाओं में अंकित कर दिया। उनके काव्य की विषय–सामग्री देश की सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थिति से प्रभावित है। सुभद्राजी के काव्य में राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दोनों ही विषयों को अभिव्यक्ति मिली है। सुभद्राजी देशभक्त पहले थी लेखिका बाद में, अतः उनमें देश की स्वाधीनता के लिए राष्ट्रीय तत्वों के प्रति रागात्मक लगाव गहरा था। उन्होंने अपने सभी भावनात्मक तत्वों कों अपनी कविताओं में पूर्ण मनोवेग के साथ लिखा है।

'जलियावाला बाग में बसंत' कविता में उन्होंने अपने राष्ट्र के निवासियों के साथ घटित त्रासद घटना से व्यथित होकर बाग की बहार और भारतीयों के प्रति हुए अत्याचार को विरोधाभास के द्वारा स्पष्ट किया है–

परिमल–हीन पराग दाग सा बना पड़ा है, हा यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।

ओ, प्रिय ऋतुराज ! किन्तु धीरे से आना, यह है शोक स्थान यहाँ मत शोर मचाना।

वायु चल, पर मंद चाल से उसे चलाना, दुःख की आहें संग उड़ा कर मत ले जाना।

कोकिल गावें, किन्तु राग रोने का आवें, भ्रमर करें गुंजार कष्ट की कथा सुनावें।

लाना संग में पुष्प, न हो वें अधिक सजीले, तो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ–कुछ गीले।

यहाँ जलियावाला बाग के भीषण नरसंहार से व्यथित होकर सुभद्रा जी ने अपनी संवेदनाओं को प्रकृति से एकाकार करने की चेष्टा की है।

राजनीति से अनुप्राणित कविताओं में उन्होंने शासक वर्ग की गलत नीतियों, भारतीय जनता पर होने वाले अत्याचारों व राष्ट्रीय क्रांतियों का वर्णन किया है। लेखिका ने ऐतिहासिक एवं पौराणिक प्रसंगों को विषय के रूप में अपनाकर अपने काव्य का प्रणयन किया है, जिनका प्रमुख उद्देश्य भारत के प्राचीन गौरव, शक्ति साहस व स्वाभिमान के वर्णन के माध्यम से जनता में राष्ट्रीय स्वाभिमान की याद दिलाना था, जिससे प्रेरित होकर वह राष्ट्रीय गौरव की पुनः प्रतिष्ठा कर सके। इस प्रसंग में इन्होंने झांसी की रानी, राखी, रक्षाबंधन, विजया दशमी

आदि कविताओं का प्रणयन किया। अंग्रेजों के अत्याचारों के विरोध में जेल भरो आन्दोलन का समर्थन करते हुए लिखी गई कविता 'गिरफ्तारी होने वाली है' इस प्रसंग में उल्लेखनीय है। महाभारत के कृष्ण जन्म प्रसंग को भुनाकर कवयित्री भारतीय जनता को नये भारत की रचना करने वाले अवतार पुरुष के रूप में आह्वान करती है–

तिलक, लाजपत, श्री गांधीजी, गिरफ्तार बहुबार हुए।
जेल गये, जनता ने पूजा, संकट में अवतार हुए।।
जेल ! हमारे मनमोहन के प्यारे पावन जन्म स्थान।
तुझको सदा तीर्थ मानेगा कृष्ण–भक्त यह हिन्दुस्तान।।
मैं प्रफुल्ल हो उठी कि आह ! आज गिरफ्तारी होगी।

राष्ट्रीय प्रसंगों में जलियावाला बाग हत्याकांड, झंडा सत्याग्रह, राष्ट्र नायकों तथा लाला लाजपतराय की मृत्यु, महात्मा गांधी का जीवन चरित आदि समस्त विषयों पर उन्होंने रचना की। साथ ही राष्ट्रीय ध्वज एवं राष्ट्र भाषा के प्रति प्रेम को भी भावुकता के साथ लिखा।

सामयिक रूप में सुभद्राजी के समय में समाज में विभिन्न धर्मों, विभिन्न जाति से जुडें लोगों में वैमनस्य व्याप्त था तथा वर्ग विभेद भी अधिक था। ऐसे वातावरण में सर्वधर्म समभाव व विश्वबंधुत्व से प्रेरित काव्य रचना करना इनकी अपनी विशेषता है। सुभद्राजी की कविताएं उनके परिवेश से प्रभावित है, जो देशप्रेम एवं देशभक्ति के द्वारा त्याग एवं बलिदान की प्रेरणा देती है। लेखिका के जीवन के जितने भी रूप और भाव दिखते हैं, वे सभी विभिन्न शीर्षकों के द्वारा उनकी रचनाओं में अवतरित हुए हैं। सुभद्राजी के समग्र राष्ट्रीय काव्य के मूल्य दो रूप में प्रकट हैं– 1. राष्ट्र प्रेम 2. राष्ट्र–भक्ति।

प्रेम की विशेषता है कि व्यक्ति जिससे प्रेम करता है, उसके प्रति अपना सर्वस्व समर्पण कर देता हैं। सुभद्राजी ने देश से प्रेम किया और स्वयं को देश के प्रति समर्पित कर दिया, जिसकी झलक इनके काव्य में साफ–साफ दिखाई देती है। राष्ट्र प्रेम में डूब कर उन्होंने देश के प्रत्येक तत्व का मुक्त कंठ से गुणगान किया तथा मातृभूमि, प्रकृति, भाषा, संस्कृति, इतिहास, धर्म आदि के साथ ममत्व स्थापित किया। 'झांसी की रानी' शीर्षक प्रसिद्ध कविता में स्वराज्य प्राप्ति के लिए मर मिटने वाली झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की उन्होंने उन्मुक्त कंठ से प्रशंसा की है–

चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खुब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

यह कविता तत्कालीन अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरोध में जन–जन का कंठहार थी। आज तक स्वाधीनता और राष्ट्रप्रेम की परिभाषा इन पंक्तियों के अभाव में पूर्ण नहीं हो पाती है। तिलक, गांधी, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के साथ वे महाराणा प्रताप आदि शूरवीरों को अपने गीतों में अमर कर देती है। योद्धा इतिहास रचता है और कवि उनके यशोगान द्वारा भविष्य को इतिहास से प्रेरित करता है।

'वीरों का कैसा हो वसंत' कविता में वे एक ओर मेवाड़ राजवंश के स्वदेश प्रेम को अमर करती है, दूसरी तरफ भूषण और चंद कवियों की परम्परा का स्मरण करती है, जिन्होंने शूरवीरों को अपनी लेखनी से अमर कर दिया। अंग्रेजी शासन की अधीनता में उन्हें दुःख है कि कोई राष्ट्रभक्ति का उद्वेलन करने वाला स्वर या कलम नहीं है जो विदेशी आक्रांताओं के खिलाफ वीरों को प्रसूत कर सकें। 'वीरों का कैसा हो वसंत' कविता वीरों को उत्प्रेरित

करने की कामना से परिपूर्ण है। सुभद्रा जी व्यथित है कि वर्तमान में अंग्रेजी शासन में स्वतंत्र लेखन संभव नहीं है, फिर जनता को जाग्रत कैसे किया जाए–

हल्दीघाटी के शिला खण्ड
ऐ दुर्ग सिंहगढ़ के प्रचण्ड
राणा ताना का कर घमंड,
दो जगा आज स्मृतियां ज्वलंत
वीरों का कैसा हो वसंत।
भूषण अथवा कवि चंद नहीं
बिजली भर दे वह छन्द नहीं
है कलम बंधी स्वच्छंद नहीं,
फिर हमें बताएं कौन हन्त
वीरों का कैसा हो वसंत।

आचार्य शुक्ल श्रद्धा और प्रेम के योग को भक्ति मानते है और यह तत्व सुभद्रा जी के काव्य में कूट–कूटकर भरा हुआ है। राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रभक्ति उनकी कविता का एक मात्र स्वर है। वे प्रकृति प्रेम, इतिहास दर्शन, स्वाधीनता की कामना, जनजागृति आदि के माध्यम से इस एक स्वर को विविध स्वरूपों में प्रस्तुत करती हैं। उनकी एकमात्र कामना है– स्वाधीन होना। 'स्वदेश के प्रति' कविता में वे इसे प्रस्तुत करती है–

आ, स्वतंत्र प्यारे स्वदेश आ,
स्वागत करती हूँ तेरा
तुझे देखकर हो रहा,
दूना प्रमुदित मन मेरा।।

सुभद्रा जी ने प्राचीन गौरवमयी गाथाओं से प्रेरणा लेकर राष्ट्र के प्रति उत्सर्ग, राष्ट्र निर्माण तथा राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों का निदर्शन अपने काव्य में किया है। आधुनिक युग में जब राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ तब कवियों ने जनजागृति के उद्देश्य से प्राचीन इतिहास का खूब बखान किया ताकि जनता अपने खोए हुए वैभव को पुनः प्राप्त करने का प्रयास कर सके। सुभद्राजी ने भी इसी प्रवृति को अपनाया और राष्ट्र निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

सुभदा कुमारी चौहान केवल राष्ट्र उन्नयन की बात ही नहीं करती वरन सामाजिक उत्थान की बात भी कहती है। सुभद्रा जी भारतीय समाज में व्याप्त तमाम बुराइयों को दूर करने की बात अपनी रचनाओं में करती हैं। उनके अनुसार समाज सुधार से ही राष्ट्र निर्माण संभव है। इसके लिए जहाँ कहीं से सहयोग और सुझाव मिले स्वीकार कर लेने चाहिए। देखा जाए तो सुभद्राजी का काव्य राष्ट्रीय चेतना और जनजागृति के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जो अपने समय को तो ध्वनित करेगा, साथ ही आगे के प्रत्येक समय में जनमानस को नई प्रेरणा प्रदान करेगा।

संदर्भ सूचीः–

- सुभद्रा समग्रः सुभद्रा कुमारी चौहान, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद।
- साहित्य और इतिहास दृष्टिः मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

- हिंदी साहित्य की बीसवीं शताब्दीः नन्द दुलारे वाजपेयी, लोक भारती प्रेस, इलाहाबाद।
- समकालीन कविता एक विश्लेषणः अशोक सिंह, लोकभारती प्रेस, इलाहाबाद।
- समकालीन कविता और वैचारिक आयामः डॉ. बलदेव, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली।
- नई कविताः देवराजपथिक, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
- हिंदी कविता में राष्ट्रीय चेतनाः देवराज पथिक, कादबंरी प्रकाशन नई दिल्ली।
- साहित्य और राजनीतिः डॉ. कुवरपाल सिंह, भाषा प्रकाशन, नई दिल्ली।
- यथार्थवादः डॉ. शिवकुमार मिश्र, मेकमिलन प्रकाशन, नई दिल्ली।
- कर्मठ महिलाएं : सुशीला नायर, नेशनल बुक्स ट्रस्ट, नई दिल्ली।